कुछ राहत तो जरूर मिलेगी

समय से कदम उठाए जाते तो संभवतः हवा की क्वॉलिटी इतनी खराब न होती। मगर ध्यान में रखने की बात है कि न तो यह सवाल इन चार–पांच दिनों का है और न ही मामला दिल्ली और आसपास के इलाकों तक सीमित है।

मनोज शाह।।

राष्ट्रीय राजधानी की हवा में प्रदूषण के खतरनाक स्तर को देखते हुए दिल्ली सरकार ने जिन चार तात्कालिक कदमों की घोषणा की, वे अत्यंत जरूरी हो गए थे। स्कूल–कॉलेजों को हफ्तेभर के लिए बंद करने, सरकारी और गैर–सरकारी ऑफिसों में वर्क फ्रॉम होम लागू किए जाने और हवा में धूल की मात्रा बढ़ाने वाले निर्माण कार्यों पर अस्थायी रोक लगाने से कुछ राहत तो जरूर मिलेगी। जहां तक लॉकडाउन की बात है तो सरकार ने इस पर भी कुछ प्रस्ताव तैयार किए हैं, जो सुप्रीम कोर्ट के सामने रखे जाने हैं।

अफसोस की बात यह है कि राहत के ये उपाय तब किए गए, जब सुप्रीम कोर्ट ने इसकी जरूरत बताई। अच्छा होता कि सरकार सुप्रीम कोर्ट के निर्देश से पहले ही सही समय पर इस तरह के कदम उठा लेती। आखिर मौसम विभाग की तरफ से जुटाई गई सूचनाएं तो पहले से उपलब्ध थीं। पराली का धुआं आने की बात भी पहले से मालूम थी। समय से कदम उठाए जाते तो संभवतः हवा की क्वॉलिटी इतनी खराब न होती। मगर ध्यान में रखने की बात है कि न तो यह सवाल इन चार–पांच दिनों का है और न ही मामला दिल्ली और आसपास के इलाकों तक सीमित है।

पिछले कई वर्षों से इस मौसम में दिल्ली की हवा इतनी खराब हो जाती है कि दम घुटता–सा लगने लगता है। उस दबाव में ऑड–ईवन जैसे कदम उठाए जाते हैं, जिनसे तात्कालिक तौर पर कुछ राहत भी मिलती है, लेकिन जैसे ही यह वक्त बीतता है, दूरगामी उपाय मानो अजेंडे से गायब ही हो जाते हैं। महत्वपूर्ण यह भी है कि देश के अन्य हिस्सों में इस दौर में भी हवा का प्रदूषण मुद्दा बनता नहीं दिखता। स्विट्जरलैंड स्थित क्लाइमेट ग्रुप आईक्यूएयर की ओर से करवाई गई ताजा स्टडी पर नजर डालें तो खराब एयर क्वॉलिटी वाले दुनिया के दस शहरों की सूची में दिल्ली के साथ ही कोलकाता और मुंबई भी शामिल हैं। जाहिर है तात्कालिक संदर्भों में ये महानगर भले दिल्ली से बहुत बेहतर लगें, लेकिन दुनिया के स्तर पर देखा जाए तो हवा की क्वॉलिटी को दुरुस्त करने की जरूरत तो यहां भी है ही। हालांकि ज्यादा बुरा हाल निश्चित रूप से उत्तर भारत के छोटे–छोटे शहरों में है। सेंट्रल पलूशन कंट्रोल बोर्ड के ताजा आंकड़ों के मुताबिक, पिछले हफ्ते देश के 15 सबसे ज्यादा प्रदूषित हवा वाले शहरों में दस यूपी के पाए गए। इनमें फिरोजाबाद और आगरा भी थे, जहां एक्यूआई क्रमशरू 489 और 472 पाया गया। यानी हालात कमोबेश दिल्ली–एनसीआर जैसे ही बुरे हैं। साफ है कि इस समस्या को राष्ट्रीय स्तर पर और दीर्घकालिक नजरिए से ठोस उपाय अपनाते और जारी रखते हुए ही हल किया जा सकता है।

कोई असर नहीं

अशोक वोहरा।

धर्म-दर्शन

वह गुस्से से बिल के पास गया और चींटियों से बोला– "मैं नागराज हूं, इस जंगल का राजा! मैं आदेष देता हूं कि जल्द से जल्द इस गंद को यहां से हटाओ और चलती बनो।" सर्पराज को देखकर वहां रहने वाले अन्य छोटे–छोटे जानवर थर–थर कांपने लगे। पर नन्हीं चींटियों पर उसकी धौंस का कोई असर नहीं पड़ा। यह देखकर सर्प का गुस्सा बहुत अधिक बढ़ गया और उसने अपनी पूंछ से बिल पर कोड़े की तरह जोर से प्रहार किया। इससे चींटियों को बहुत गुस्सा आया। क्षण भर में हजारों चींटियां बिल से निकलकर बाहर आई और सर्प के शरीर पर चढ़कर उसे काटने लगीं। नागराज का लगा जैसे उसके शरीर में एक साथ हजारों कांटें चुभ रहे हों। वह असहाय वेदना से बिलबिला उठे। असंख्य चींटियां उसे नोच–नोचकर खाने लगीं।

संपादकीय

कोई पीछे नहीं

बीजेपी पर यह आरोप हमेशा से रहा है कि वह सांप्रदायिक ध्रुवीकरण के आधार पर चुनाव लड़ना चाहती है, लेकिन क्या कांग्रेस के नेता यह बता सकते हैं कि महंगाई के मुद्दे पर बुलाई गई रैली में ज्यादातर धर्म के नाम पर की चर्चा क्यों की गई? और समाजवादी पार्टी को अचानक जिन्ना की चर्चा करना जरूरी क्यों लगने लगा? समाजवादी पार्टी के सहयोगी ओमप्रकाश राजभर जैसे कई नेता लोगों को यह बताने के लिए क्यों बेचैन हो गए कि आजादी के नायक मोहम्मद अली जिन्ना थे। जिन्ना कब से नायक हो गए? यदि धर्म–धर्म खेलेंगे तो चुनाव में असर जरूर होगा। वास्तव में उत्तर प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड सहित पांच राज्यों के चुनाव के समय जिस तरह से धर्म के नाम पर घात–प्रतिघात हो रहे हैं उससे तो यही लग रहा है कि सभी दलों की रणनीति धर्म के नाम पर चुनाव लड़ने की हो गई है। बीजेपी के चुनावी अभियान की शुरुआत अयोध्या से हुई थी और वह काशी होते हुए मथुरा तक जा पहुंची। लेकिन जो चुनाव कुछ दिन पहले तक विकास के मुद्दे पर लड़ा जा रहा था, वह धीरे–धीरे धर्म की तीखी बहसों पर सिमट रहा है कि धर्म का कौन कितना बड़ा लंबरदार है। फिलहाल तो यही दिख रहा है कि इन राज्यों के चुनाव में धार्मिक मुद्दा भी अहम भूमिका में होगा। अब इसका सबसे ज्यादा लाभ कौन ले पाएगा, यह समय ही बताएगा।

अभी सवाल यह है कि बाबा विश्वनाथ मंदिर कॉरिडोर के उद्घाटन पर बीजेपी ने पूरे राज्य में जो माहौल बनाया, बाबा विश्वनाथ कॉरिडोर उन आकांक्षाओं का प्रतीक है, जो करोड़ों हिंदुओं के मन में लंबे समय से पल रही थी।

एक तीर, कई निशाने

बृजेश शुक्ल।।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी वाराणसी में बाबा विश्वनाथ कॉरिडोर के उद्घाटन के पहले स्नान के लिए जब गंगा में प्रवेश कर रहे थे तो तमाम विपक्षी दलों की सतर्क निगाहें उन्हीं पर लगी थीं। यह दृश्य विपक्षी दलों के नेताओं को बेचैन कर रहा था। उन्हें करोना काल में लोगों को हुई परेशानी, बढ़ती महंगाई और आवारा पशु जैसे मुद्दों के चलते इस बार अपनी फतह लगभग तय लग रही है। वैसे, उन्हें यह भी पता है कि बीजेपी बाजी पलटने में माहिर है। इसीलिए उसके हर कदम पर वे चौकन्ना हो जाते हैं। बहरहाल, अभी सवाल यह है कि बाबा विश्वनाथ मंदिर कॉरिडोर के उद्घाटन पर बीजेपी ने पूरे राज्य में जो माहौल बनाया, क्या उसका असर चुनाव पर पड़ेगा? बाबा विश्वनाथ कॉरिडोर उन आकांक्षाओं का प्रतीक है, जो करोड़ों हिंदुओं के मन में लंबे समय से पल रही थी। जाहिर है, बीजेपी बनारस के रास्ते पूरे भारत को एक बड़ा संदेश देना चाहती थी और एक हद तक उसमें सफल भी हुई।

बीजेपी ने इस एक तीर से कई निशाने साधे हैं। नरेंद्र मोदी उन चंद लोगों में शामिल हो गए, जिन्होंने बाबा विश्वनाथ मंदिर का निर्माण और विकास में अपना योगदान किया। प्रधानमंत्री ने देर रात बनारस का दौरा किया विकास योजनाएं

देखीं। दूसरे दिन विकास योजनाओं के बारे में ही बनारस आए सभी मुख्यमंत्रियों और उप–मुख्यमंत्रियों के साथ लंबी बैठक की। इस तरह उन्होंने विपक्षी नेताओं के उस हथियार को भी बेअसर कर दिया कि बीजेपी सिर्फ धर्म की राजनीति करती है, विकास की नहीं। यह दिलचस्प है कि राजधानी दिल्ली या लखनऊ से नहीं बल्कि बनारस से धर्म और विकास के संदेश एक साथ भेजे गए। जो भारत को जानते हैं, उन्हें यह समझने में कोई दिक्कत नहीं होगी कि बनारस से भेजा गया संदेश इस देश के लोगों के गले के नीचे बहुत तेजी से उतरता है। लेकिन सवाल यहां यह उठ रहा है कि क्या उत्तर प्रदेश, पंजाब, उत्तराखंड सहित पांच राज्यों के चुनाव धार्मिक मुद्दे के आधार पर लड़े जाएंगे? क्या बनारस में किया गया इतना बड़ा आयोजन सिर्फ चुनावी था? इस मुद्दे पर बहस हो सकती है, लेकिन इसमें कोई दो राय नहीं है कि इस आयोजन ने अपने पीछे तमाम संदेश छोड़े हैं। बनारस से ही लगभग 8 बार विधायक रहे और पिछले दिनों बीजेपी से नाराज चल रहे श्यामदेव राय चौधरी इस आयोजन के बाद भरे गले से कहते हैं कि उनके पास बोलने के लिए कोई शब्द नहीं है। उन्होंने कभी सोचा भी नहीं था कि बाबा विश्वनाथ परिसर को इतनी भव्यता मिल जाएगी। फिर भी यह समर्थकों की बात हुई। यदि विरोधियों के दृष्टिकोण से देखें तो यह पूरा मामला धर्म के चुनावी इस्तेमाल का है। लेकिन यह मान भी लिया जाए कि बनारस में बाबा विश्वनाथ कॉरिडोर का उद्घाटन चुनावी लाभ के लिए किया गया था तो विपक्ष से भी वही सवाल पूछा जा सकता है कि क्या वह धर्म का सहारा नहीं ले रहा? बीजेपी जिस समय वाराणसी में मंदिर कॉरिडोर के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा उद्घाटन की भव्य तैयारियां कर रही थी, उस समय कांग्रेस की ओर से राजस्थान में महंगाई के विरोध में आयोजित एक रैली में पार्टी नेता राहुल गांधी हिंदू और हिंदुत्व के बारे में अपनी राय रख रहे थे। वह कह रहे थे कि हिंदुत्ववादियों को सत्ता से हटा कर हिंदुओं को सत्ता सौंप दी जानी चाहिए। हिंदुत्ववादी बर्बर हैं। राहुल गांधी का हमला बीजेपी पर था, लेकिन बीजेपी के नेता और कार्यकर्ता इस हमले से भी खुश हैं।

अष्टयोग-5018

	3	1		6	7	
4	28		25		36	
2	5		3		7	4
	34		35	5	33	
3		7	6			1
7	34	5	42	3	30	
1				7	2	

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं.गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी.सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5017 का हल

5	3	6	4	1	7	2
4	28	2	25	2	36	7
2	5	1	3	6	7	4
6	28	5	35	3	39	6
3	2	4	6	7	5	1
7	32	3	42	5	32	5
1	5	7	6	4	2	3

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

आबोहवा दमघोंटू हो चुकी

मोहन। वायु प्रदूषण पर पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय की एक रिपोर्ट चौंकाने वाली है। रिपोर्ट के मुताबित दिल्ली के वायु प्रदूषण में पराली का हिस्सा सिर्फ पांच फीसदी है। इसके बावजूद फिर राजधानी में कोहरा छाया हुआ है। जबकि पीएम 10 का स्तर 320 के करीब और पीएम 2.5 का स्तर 160 के ऊपर दर्ज किया गया। फिर किसानों की पराली कितनी जबाबदेह है यह खुद समझ सकते हैं। दिल्ली की आबोहवा दमघोंटू हो चुकी है। सांस लेना भी मुश्किल हो चला है। कुछ साल पूर्व एक सर्वे की रिपोर्ट में बताया गया था कि प्रदूषण की वजह से 40 फीसदी लोग दिल्ली में रहना नहीं चाहते। जहरीली होती दिल्ली सेहत के लिए बड़ा खतरा बन गई है। धुएं का मेल जनमानस को निगल जाएगा। हालात यहां तक हैं कि 24 घंटे में 20 से 25 सिगरेट से जितना जहरीला धुआं निकला है उतना एक नवजात निगल रहा है। जरा सोचिए, हमने दिल्ली को किस स्थिति में लाकर खड़ा कर दिया है।